E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in/

Received: 13-12-2023
Accepted: 17-02-2024

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 2; Issue 2; 2024; Page No. 122-127

आतंकवादी गतिविधियां: राजस्थान राज्य के विशेष संदर्भ में (वर्ष 2019 से 2022 तक)

हरि शंकर गुप्ता

सहायक अध्यापक, भूगोल विभाग, बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: हरि शंकर गुप्ता

सारांश

आज हम वैश्विक गतिशीलता के युग में रह रहे हैं। वर्तमान समय में आतंकवाद समस्त राष्ट्रों के समक्ष चुनौतीपूर्ण समस्या है। ना केवल विकासशील देश अपितु विकसित देशों के लिए भी आतंकवाद की समस्या जटिल है। यद्यपि सूचना प्रौद्योगिकी ने ससांर को तकनीकी संदर्भ में एक समूह के रूप में प्रकट किया है। तथापि यही कारण है की आतंकवाद विश्व मे तेजी से फले रहा है। आतंकवाद के रूप में इस विश्वव्यापी चुनौती से लड़ना समस्त राष्ट्रों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है, एवं अपनी अर्थव्यवस्थाओं एवं लोकतंत्र की सुरक्षा किस प्रकार इस जटिल समस्या से सुनिश्चित करें यह चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में विकास, स्थायित्व, सुशासन और कानून का शासन एक दूसरे से सहसंबद्ध हैं और अशांति को उत्पन्न कोई भी खतरा देश के सतत विकास के उद्देश्य में बाधा बनता है। आतंकवाद न केवल राजनीतिक और सामाजिक वातावरण को नष्ट करता है बल्कि देश के आर्थिक स्थायित्व को खतरा भी पहुँचाता है, प्रजातंत्र को दुर्बल बनाता है और यहाँ तक कि सामान्य नागरिकों को जीने के उनके अधिकार सहित बुनियादी अधिकारों से वचित करता है। आतंकवादी किसी धर्म अथवा सप्रं दाय या समुदाय के नहीं होते। आतंकवाद कुछ उग्र लोगों, जो अपने घृणित लक्ष्यों की प्राप्ति में निर्दोष नागरिको ं की लक्षित हत्या का आश्रय लेते हैं, द्वारा प्रजातंत्र और सभ्य समाज पर हमला है। आज आतंकवाद ने आधुनिक सचं ार प्रणालियों, सगं ठित अपराध, मादक द्रव्य के अवैध व्यापार, जाली मुद्रा और वैश्विक स्तर पर इनके प्रयोग सहित विश्वभर में अंतर्राष्ट्रीय शांति और स्थायित्व को खतरा पहुँचाते हुए नया तथा अधिक खतरनाक आयाम प्राप्त कर लिया है। इस शोध पत्र में इन्हीं आतंकवादी गतिविधियो ं को उल्लेख करने का प्रयास है।

मूल शब्दः आतंकवाद, व्यापार, अंतर्राष्ट्रीय शांति, सामाजिक वातावरण

प्रस्तावना

देश में आतंकवादी हिंसा की बढ़ती घटनाओं के दृष्टिगत भारत में उभरती हुई एक सर्वसम्मति है कि आतंकवाद से निपटने के लिये एक सुदृढ़ विधायी ढाँचा सृजित किया जाना चाहिये। यहाँ तक कि मानवाधिकारों और सवैंधानिक मूल्यों को सुरक्षित रखते हुए भी आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई में सुरक्षा बलों को सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। आज आतंकवाद सार्वजनिक व्यवस्था के मुद्दों से बढ़कर हो गया है क्योकि यह सगं ठित अपराध, गैर–कानूनी वित्तीय अंतरणों और शस्त्र तथा मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के जैस े कृत्यों के साथ समायोजित हो गया है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा हैं। भारत जैसा बहु–सांस्कृतिक, उदार और प्रजातांत्रिक देश अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण आतंकवादी कृत्यों के प्रति अत्यंत सुभेद्य है। आतंकवाद समकालीन युग की सर्वाधिक ज्वलन्त अन्तर्राष्ट्रीय समस्या है। कोई भी देश ऐसा नहीं है जो इसकी पीड़ा से न गुजरा हो। भूमण्डलीकरण के दायरे के साथ ही आतंकवाद का भी दायरा बढ़ता गया और आज यह सुरसा की मुंह की तरह विभिन्न रूपों में फैल रहा है। इसमें लिंग आधारित आतंकवाद, दलित चेतनावादी आतंकवाद, क्षेत्रीय पृथकतावादी आतंकवाद, साम्प्रदायिक आतंकवाद, जातीय आतंकवाद, जेहादी आतंकवाद विस्तारवादी आतंकवाद से लेकर प्रायोजित आतंकवाद तक शामिल है। वस्तुतः आतंकवाद एक ऐसा सिद्धान्त है जो भय या त्रास के माध्यम से अपने लक्ष्य की पूर्ति करने में विश्वास करता है। आज आतंकवाद संगठित उद्योग का रूप धारण कर चुका है। एक जगह से खत्म होता नजर आता है, तो दूसरी जगह यह तेजी से सिर उठाने लगता है। कभी सभ्यताओं के संघर्ष के बहाने तो कभी धर्म की आड़ में रोज तमाम जीवन–लीलाओं का यह लोप कर रहा है। इसका शिकार शिशु से लेकर वृद्धजन तक हैं। आतंक फैलाने वाले लोग अपने आप को राष्ट्रवादी, क्रांतिकारी या निष्ठावान सैनिक कहलाना पसंद करते हैं। आतंकवाद एक प्रकार का माहौल को कहा जाता हैं इसे एक प्रकार के हिंसात्मक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो कि अपने आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं विचारात्मक लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति के लिए गैर–सैनिक अर्थात नागरिकों की सुरक्षा को भी निशाना बनाते हैं। गैर–राज्य कारकों द्वारा किए गए राजनीतिक, वैचारिक या धार्मिक हिंसा को भी आतंकवाद की श्रेणी का ही समझा जाता है। अब इसके तहत गैर–कानूनी हिंसा और युद्ध को भी शामिल कर लिया गया है। अगर इसी तरह की गतिविधि आपराधिक सगं

ठन द्वारा चलाने या उसको बढ़ावा देने के लिए करता है तो सामान्यतः उसे आतंकवाद नहीं माना जाता है, यद्यपि इन सभी कार्यों को आतंकवाद का नाम दिया जा सकता है। गैर–इस्लामी सगं ठनों या व्यक्तित्वों को नजरंदाज करते हुए प्रायः इस्लामी या जिहादी के साथ आतंकवाद की अनुचित तुलना के लिए इसकी आलोचना भी की जाती है। आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति आतंक शब्द से हुई है। आतंकवाद ऐसे कार्यों को कहते हैं, जिसे किसी प्रकार का आतंक फैलाने के लिए किया जाता है। एसे कार्य करने वालों को आतंकवादी कहते हैं। आंतकवाद दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है, जिससे अब तक कोई भी देश अछतू ा नहीं रहा हैं। फिर चाहे शक्तिशाली अमेरिका में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का गिराना हो या भारतीय ससंद में हुआ हमला। हर देश हर प्रांत आज इसकी चपटे में है। आतंकवाद का शिकार आज हर इसंान हैं। फिर चाहे इसे शह देने वाला पाकिस्तान ही क्यों न हो। आखिरकार बने जीर भुट्टों जैसी शख्सियत जो पर्वू प्रधानमंत्री रहने के साथ–साथ पाकिस्तान में बीते चुनाव की प्रधानमंत्री की प्रमुख दावेदार थी, इसकी शिकार बनी। भारत आतंकवाद से कई सालों से इस आग में झुलस रहा है। प्रतिवर्ष आतंकवाद के इशारों पर आतंकियों द्वारा भारत में छिपे कुछ गद्दारों से मिलकर अक्सर देश के विभिन्न प्रांतों में हमला करते रहते हैं। खासकर वे हमले एसे मौके पर करते हैं जिससे हमारे धर्मनिरपेक्ष तानेबाने को तोड़ा जा सके। फिर चाहे राजस्थान, गुजरात का सकं टमोचन मंदिर पर हमला करना हो या अजमेर शरीफ और हैदराबाद की मस्जिद पर बम विस्फोट। दर असल आतंकवाद का उद्देश्य केवल मात्र दो धर्मों बीच बने हुए प्रेम और भाईचारे को समाप्त करना होता है। उनका ना तो मजहब होता है ना ही कोई धर्म। वे इस जद्दोजहद में हर बार हमले करते रहते हैं और माओवाद जैसी समस्या भी भारत में इस कदर बढ़ चुकी है कि ये भीतर ही भीतर देश को खोखला बनाने का काम कर रही है। आज भारत के चालीस फीसदी प्रांत ऐसे है जो परूी तरह इस उग्रवाद की चपेट में आ चुके है और इनके एक नहीं कई रूप है। बोडो, उल्फा, माओवाद, पिपुल्सवाद ग्रुप जैसे कई सगंठन है जो भारत में तेज गति से अपना जाल फैला रहे हैं। पर्वोत्तर राज्यों में नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर या असम जहां बोडो और उल्फा सगंठन ने राज्य और केन्द्र सरकार की नाक में दम कर रखा है वहीं बिहार, उड़ीसा, बगंाल और झारखंड माओवादियों के निशानें पर है। इन संगठनों में अधिकतर अपने देशवासी है। अब तो इन तमाम संगठनों की फंडिंग भी बाहरी देशों से होने लगा है जो कि एक चिंता का विषय है। पिछले कुछ दशकों में आतंकवाद विश्व के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती बन के उभरा है। धीरे–धीरे यह दुनिया के कई देशों को अपनी चपेट में ले चुका है। हर वर्ष हजारों लोग इसके कारण अपने प्राणों से हाथ धो बैठते है। अनगिनत लोगों का घर–बार उजड़ जाता है। धन–संपत्ति का नाश होता है और मानव जीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है। आतंकवाद के कारण देश और दुनिया में भय का माहौल बना हुआ है। आतंकवाद मानवता और सभ्य समाज के लिए एक बड़ा कलंक है। आतंकवाद एक घिनौना कृत्य है क्योंकि यह आम नागरिकों को निशाना बनाता है। आतंकवादी अपने विरोधियों से सीधे कभी नहीं लड़ते। वह छुप के वार करते हैं। उनका हमला ज्यादातर निहत्थे और मासमूों पर ही होता है। वो ज्यादा से ज्यादा नागरिकों को मारकर अपनी बात दुनियाँ के सामने रखना चाहते हैं। 1971 में पाकिस्तान जब भारत से युद्ध हार गया और उसके दो टुकड़े हो गए तो वो समझ गया कि भारत से सीधे युद्ध में जीतना सभंव नहीं है। अपनी गुप्तचर सस्ंथा आइ. एस. आइ का इस्तेमाल कर उसने भारत से एक अप्रत्यक्ष युद्ध की शुरुआत की। भारत में कई ऐसे सगंठन थें जो सरकार के कामकाज से संतुष्ट नहीं थे। आई.एस.आई. ने उन्हें भारत के खिलाफ भड़काया, उन्हें धन और हथियार उपलब्ध कराया और यहीं से भारत में बड़े पैमाने पर आतंकवाद की शुरुआत हुई।

आतंकवादः प्रकार, उत्पत्ति और परिभाषा

'आतंकवाद' शब्द की उत्पत्ति फ्राँसीसी क्रांति के दौरान वर्ष 1793–94 के आतंक के शासन से हुई। यूरोप और अन्यत्र भी विशेषकर 1950 के दशक के उत्तरार्द्ध में वामपथी उग्रवाद उभर कर सामने आया। भारत में नक्सली और माओवादी सहित पश्चिम जर्मनी में रेड आर्मी गुट, जापान का रेड आर्मी गुट, संयुक्त राज्य अमेरिका में विदरमेन और ब्लैक पैन्थर्स, उरुग्वे के तूपामारोस और अन्य कई वाम पथी उग्रवादी दल विश्व के भिन्न–भिन्न भागों में 1960 के दशक के दौरान उत्पन्न हुए। आज अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद अधिकांशतः इस्लामी रूढ़िवाद की विचारधारा से प्रेरित है तथा इसकी अग्रपक्ति में ओसामा बिन लादेन का अल–कायदा और इसके घनिष्ठ सहयोगी अफगानिस्तान में तालिबान हैं। सोवियत–विरोधी नीतियों के कारण तालिबानों की तेज़ वृद्धि सयुंक्त राज्य अमेरिका की CI और पाकिस्तान की ISI द्वारा दिये गए व्यापक सरंक्षण के कारण सभंव हुई थी। इससे न केवल अफगानिस्तान बल्कि पाकिस्तान और भारत में भी सुरक्षा सबंधी गंभीर चिंताएँ उत्पन्न हो चुकी हैं।

साहित्य पुनरावलोकन

1. आर. जोनाथन, टेर्ररिज्म एंड होमलण्ेड सिक्योरिटी, 2011 – इस पुस्तक में आतंकवाद के विभिन्न विषयों का समावशे किया है, जैसेः आतंकवाद की सामजिक पृष्ठभूमि, आतंकवादी सगं ठन व इसके वित्तीय संसाधनों का वर्णन, आधुनिक आतंकवाद के कारणों आदि पर लेखक द्वारा किया गया वर्णन अद्वितीय है।
2. पीटर आर. न्यमू न, ओल्ड एडं न्यूटेर्ररिज्म, पोलिटी प्रेस, 2009 – प्रस्तुत पुस्तक में प्रमुख विषय यह है कि आतंकवादियों के संगठनात्मक
3. एडरीयन गुअलके, दिन्यू ऐज ऑफ टेर्ररिज्म एंड इंटरनेशनल पॉलिटिकल सिस्टम, आई. बी. टोरिस, लंदन व न्यूयार्क, 2009 – प्रस्तुत पुस्तक में लेखक की आतंकवाद विषय से सबं धित गहन दृष्टि उजागर हुई है।
4. ब्रिगीटे एल. नाकोस, टेर्ररिज्म एडं काउंटर टेर्ररिज्म, लोंगमन, बोस्टन, 2011 – यह आतंकवाद विषय पर लिखी गयी एक व्यवस्थित रचना है। यह आतंकवाद की परिभाषा, वैश्विक आतंकवाद, धार्मिक आतंकवाद, राज्य प्रायोजित आतंकवादी समूहों, उनके लक्ष्यों, नागरिक स्वतंत्रताओं व सुरक्षा, मीडिया का दोहन आदि विषयों पर विस्तार स` प्रकाश डालती है।

अध्ययन के उद्देश्य प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उद्देश्य है

1. आतंकवाद समस्या का विश्लेषण करना।
2. राजस्थान में आतकंवाद की समस्या के स्तर का विशेलषण करना।
3. राजस्थान में आतंकवाद की प्रमुख घटनाओ का विवरण प्रस्तुत करना।
4. राजस्थान में आतंकवाद की समस्या निवारण हेतु संभावित उपाय सुझाना।

आंकड़ो के स्त्रोत

प्रस्तुत शोध–पत्र द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर तैयार किया गया है। इस हेतु विभिन्न प्रकार के उपलब्ध साहित्यों एवं विभिन्न ऑनलाइन स्रोतों से आंकड़ों का सकंलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान की आकृति लगभग पतंगाकार है। राज्य २३ ३ से ३० १२ अक्षांश और ६६ ३० से ७८ १७ देशान्तर के बीच स्थित है। इसके उत्तर में पाकिस्तान, पंजाब और हरियाणा, दक्षिण में मध्यप्रदेश और गुजरात, पर्वू में उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश एवं पश्चिम में पाकिस्तान हैं। सिरोही से अलवर की ओर जाती हुई ४८० कि॰मी॰ लम्बी अरावली पर्वत श्रृंखला प्राकृतिक दृष्टि से राज्य को दो भागों में विभाजित करती है। राजस्थान का पर्वूी सम्भाग शुरू से ही उपजाऊ रहा है। इस भाग में वर्षा का औसत ५० से.मी. से ६० से.मी. तक है। राजस्थान के निर्माण के पश्चात् चम्बल और माही नदी पर बड़े–बड़े बांध और विद्युत गृह बने हैं, जिनसे राजस्थान को सिंचाई और बिजली की सुविधाएं उपलब्ध हुई है। अन्य नदियों पर भी मध्यम श्रेणी के बांध बने हैं, जिनसे हजारों हैक्टर सिंचाई होती है। इस भाग में ताम्बा, जस्ता, अभ्रक, पन्ना, घीया पत्थर और अन्य खनिज पदार्थों के विशाल भण्डार पाये जाते हैं। राज्य का पश्चिमी भाग देश के सबसे बड़े रेगिस्तान "थार" या 'थारपाकर' का भाग है। इस भाग में वर्षा का औसत १२ से.मी. से ३० से.मी. तक है। इस भाग में लूनी, बांड़ी आदि नदियां हैं, जो वर्षा के कुछ दिनों को छोड़कर प्रायः सूखी रहती हैं। देश की स्वतंत्रता से पर्वू बीकानेर राज्य गंगानहर द्वारा पंजाब की नदियों से पानी प्राप्त करता था। स्वतंत्रता के बाद राजस्थान इडं स बेसिन से रावी और व्यास नदियों से ५२.६ प्रतिशत पानी का भागीदार बन गया। उक्त नदियों का पानी राजस्थान में लाने के लिए सन् १६५८ में 'राजस्थान नहर' (अब इदिरा गांधी नहर) की विशाल परियोजना शुरू की गई। जोधपुर, बीकानेर, चूरू एवं बाड़मेर जिलों के नगर और कई गांवों को नहर से विभिन्न लिफ्ट परियोजनाओं से पहुंचाये गये पीने का पानी उपलब्ध होगा। खारी नदी उदयपुर और अजमेर मेरवाडा की सीमा रेखा थी। पश्चिमी राजस्थान यानी मारवाड़ को मरूकान्इतर भी कहा जाता है। (10) इस प्रकार राजस्थान के रेगिस्तान का एक बडा भाग अन्ततः शस्य श्यामला भूमि में बदल जायेगा। सरू तगढ़ जैसे कई इलाको में यह नजारा देखा जा सकता है। गंगा बेसिन की नदियों पर बनाई जाने वाली जल–विद्युत योजनाओं में भी राजस्थान भी भागीदार है। इसे इस समय भाखरा–नांगल और अन्य योजनाओं के कृषि एवं औद्योगिक विकास में भरपूर सहायता मिलती है। राजस्थान नहर परियोजना के अलावा इस भाग में जवाई नदी पर निर्मित एक बांध है, जिससे न केवल विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई होती है, वरन् जोधपुर नगर को पेयजल भी प्राप्त होता है। यह सम्भाग अभी तक औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। पर उम्मीद है, इस क्षेत्र में ज्यो–ज्यों बिजली और पानी की सुविधाएं बढ़ती जायेगी औद्योगिक विकास भी गति पकड़ लेगा। इस बाग में लिग्नाइट, फुलर्सअर्थ, टंगस्टन, बैण्टोनाइट, जिप्सम, संगमरमर आदि खनिज प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। बाड़मेर क्षेत्र में सिलिसियस अर्थ और कच्चा तेल के भंडार प्रचुर मात्रा में हैं। हाल ही की खुदाई से पता चला है कि इस क्षेत्र में उच्च किस्म की प्राकृतिक गैस भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अब वह दिन दूर नहीं, जबकि राजस्थान का यह भाग भी समृद्धिशाली बन जाएगा। राज्य का क्षेत्रफल ३.४२ लाख वर्ग कि.मी है जो भारत के कुल क्षेत्रफल का १०.४० प्रतिशत है। यह भारत का सबसे बड़ा राज्य है। वर्ष १९९६–९७ में राज्य में गांवों की सख्या ३७८९६ और नगरों तथा कस्बों की सख्या २२२ थी। राज्य में ३३ जिला परिषदें, २३५ पचांयत समितियां और ९१२५ ग्राम पचांयतें हैं। नगर निगम ४ और सभी श्रेणी की नगरपालिकाएं १८० हैं।

सन् १९९१ की जनगणना के अनुसार राज्य की जनसंख्या ४.३९ करोड़ थी। जनसख्या घनत्व प्रति वर्ग कि॰मी॰ १२६ है। इसमें पुरुषों की संख्या २.३० करोड़ और महिलाओं की संख्या २.०६ करोड़ थी। राज्य में दशक वृद्धि दर २८.४४ प्रतिशत थी, जबकि भारत में यह औसत दर २३५६ प्रतिशत थी। राज्य में साक्षरता ३८.८१ प्रतिशत थी। जबकि भारत की साक्षरता तो केवल २०.८ प्रतिशत थी जो देश के अन्य राज्यों में सबसे कम थी। राज्य में अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति राज्य की कुल जनसंख्या का क्रमशः १७.२९ प्रतिशत और १२.४४ प्रतिशत है।

राजस्थान की प्रमुख आतंकवादी घटनाएँ

1. 18 मई 2019 को जयपुर में इडियन मुजाहिदीन (आईएम) के गिरफ्तार आतंकवादी आरिज खान उर्फ जुनैद ने एनआईए के सामने कबलू किया है कि 2005 में दिल्ली में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों में उसके संगठन का हाथ था और दिल्ली के सरोजिनी नगर मार्केट मे ं आईईडी लगाने में उसकी भूमिका थी। जुनैद ने दिल्ली (2005), वाराणसी (2006), उत्तर प्रदेश कोर्ट कॉम्प्लेक्स (2007), और जयपुर, अहमदाबाद और 2008 में दिल्ली सिलसिलेवार विस्फोटों में अपनी भूमिका के बारे में भी कबूल किया। कबूलनामे ने दिल्ली द्वारा की गई जांच पर सदेंह उठाया पुलिस ने दावा किया कि उन विस्फोटों के पीछे लश्कर–ए–तैयबा (एलईटी) का हाथ था। जुनैद ने कबूल किया कि उसने और एक अन्य आईएम आतंकवादी–मिर्जा शादाब बगे ने सरोजनी नगर मार्केट में आईईडी रखा था, जबकि आतिफ अमीन ने पहाड़गंज में आईईडी रखा था। तीसरा आईईडी मोहम्मद शकील और साकिब निसार ने डीटीसी बस में रखा था; केंद्रीय गृह मंत्रालय (यूएमएचए) के एक अनाम अधिकारी ने कहा, सभी आतंकवादी आईएम के सदस्य थे। 2006 में, दिल्ली पुलिस ने पांच सदिग्धों तारिक डार, मोहम्मद हुसैन फाजली, रफीक शाह, फारूक अहमद बटलू और गुलाम अहमद खान, जो कि जम्मू–कश्मीर के निवासी थे, के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया और आरोप लगाया कि सभी पांचों लश्कर–ए–तैयबा से संबधित हैं। लश्कर–ए–तैयबा के छह अन्य कथित सदस्यों – अबू हुज़फे, अबू अल कामा, अबू ज़ैद, राशिद, मंसरू और सज्जाद सलाफी – को भी इसी मामले में शामिल होने के लिए आरोपी बनाया गया था। 29 अक्टूबर 2005 को पहला विस्फोट पहाड़गंज में हुआ जिसमें 17 नागरिक मारे गए और 108 घायल हो गए। दूसरा विस्फोट सरोजनी नगर मार्केट में हुआ जिसमें 50 नागरिक मारे गए और 104 घायल हो गए और तीसरा विस्फोट ओखला में हुआ जिसमें 13 नागरिक घायल हो गए।
2. 21 मई 2020 को भरतपुर में कोलकाता पुलिस की एसटीएफ ने दो व्यक्तियों मोहम्मद अब्दुस सत्तार और आजाद को गिरफ्तार किया और उनके कब्जे से 10 लाख रुपये मूल्य के नकली भारतीय मुद्रा नोट (एफआईसीएन) बरामद किए। सत्तार और आज़ाद दोनों FICN के साथ एक दुकान से सामग्री खरीदने की कोशिश कर रहे थे। एक अज्ञात पुलिस अधिकारी ने कहा, नकली नोट 2,000 रुपये के मूल्यवर्ग में थे। सत्तार पश्चिम बगांल के मालदा जिले के कालियाचक के रहने वाले हैं, जबकि आजाद राजस्थान के भरतपुर के रहने वाले हैं।
3. 12 जनवरी 2021 को राजस्थान में भारतीय गणतंत्र दिवस से पहले, आत्मघाती हमलावरों द्वारा घुसपैठ की सभांवना पर खुफिया इनपुट के बाद राजस्थान से लगती भारत–पाकिस्तान सीमा हाई अलर्ट पर है। राज्य में अंतरराष्ट्रीय सीमा पर गश्त बढ़ा दी गई है. सत्रूों के मुताबिक, अधिकारियों को मिले इनपुट से आतंकियों के हेरोइन और विस्फोटकों की खेप के साथ सीमा पार करने

की कोशिश की आशंका जताई जा रही है। इन इनपुट्स के बाद बीएसएफ को और अलर्ट कर दिया गया है और अतिरिक्त सतर्कता बरतने का निर्देश दिया गया है. रात्रि कर्फ्यू पहले से ही जारी है और सवेंदनशील स्थानों पर अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए गए हैं और निगरानी उपकरणों से निगरानी की जा रही है। अगले 2–3 दिनों में बीएसएफ ऑपरेशन सर्द हवा भी शुरू करने जा रही है.

बीएसएफ के आधिकारिक सत्रूों ने सीमाओं पर चौकसी बढ़ाने की पुष्टि करते हुए बताया कि राजस्थान से लगती अंतरराष्ट्रीय सीमाओं पर कड़ी चौकसी बरती जा रही है. सीमाओं पर गश्त की जा रही है और गैजेट्स के जरिए निगरानी की जा रही है और अतिरिक्त सतर्कता रखी जा रही है. सत्रूों ने बताया कि रात के समय कर्फ्यू लगाया जा रहा है और कर्फ्यू का उल्लघंन करने वालों को देखते ही गोली मारने के निर्देश दिए गए हैं.

4. पुलिस ने कहा कि 14 फरवरी 2021 को जयपुर में सदिग्ध आईएस समर्थक मोहम्मद इकबाल, जो राजस्थान पुलिस की हिरासत में है, कथित तौर पर आतंकी संगठन के लिए भारत और चीन से धन जुटाया था। आतंकवाद निरोधी दस्ते के अतिरिक्त महानिदेशक उमेश मिश्रा ने जयपुर में संवाददाताओं को बताया कि इकबाल उर्फ ट्रैवल हक ने कथित तौर पर चीन से और हवाला (अवैध धन लेनदेन) के माध्यम से भारत से दुबई में धन हस्तांतरित किया था।
5. 7 जून 2022 को बाड़मरे जिले में राजस्थान पुलिस की खुफिया एजेसियों ने पाया कि आईएसआई सचांलक कथित तौर पर पज्ञा स्थलों पर दान पेटियां लगाते हैं, और भक्तों द्वारा दान किए गए धन का उपयोग राज्य के सीमावर्ती गांवों में आतंकवादी गतिविधियों को वित्तपोषित करने के लिए करते हैं। अधिकारियों ने आईएसआई जासूस दीना खान से पछू ताछ के दौरान फंडिंग नेटवर्क का खुलासा किया, जिस पिछले हफ्ते बाड़मेर जिले के एक दूरदराज के गांव से गिरफ्तार किया गया था। राज्य खुफिया और सुरक्षा विंग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, "खान ने खुलासा किया कि वह बाड़मेर जिले के चोहटन गांव में एक छोटी मजार का प्रभारी था और उसने मजार के दान के 3.5 लाख रुपये सतराम महेश्वरी और उसके भतीजे विनोद महेश्वरी जैसे अन्य जासूसों को बांट दिए।" पाकिस्तान में दीना के आका उसे फोन पर बुलाते थे, और उससे तदनुसार फंड वितरित करने के लिए कहते थे।

15 अगस्त 2022 में अजमेर जिला पुलिस ने अजमेर के बाजार में FICN प्रसारित करने के आरोप में चार लोगों को गिरफ्तार किया, जिनकी पहचान बिहार के मोहम्मद जोशीन, मोहम्मद आफताब, मोहम्मद सोहल और समराज आलम के रूप में हुई। उनके पास से 84,000 रुपये मूल्य के एफआईसीएन बरामद किए गए हैं। सभी आरोपियों को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें पुलिस हिरासत में भेज दिया गया। मामले की जांच के लिए आईबी अधिकारियों की एक टीम शहर में है। सत्रूों के मुताबिक, करेंसी नोट बनाने में इस्तेमाल होने वाला कागज और स्याही भारत का नहीं है। सत्रूों ने बताया कि जांच टीम को संदेह है कि नोट या तो पाकिस्तान या बांग्लादेश में छापे गए थे या नेपाल के रास्ते तस्करी कर लाए गए थे। पुलिस रैकेट के सरगना को पकड़ने की कोशिश कर रही है। १३ मई २००८ जयपुर बम विस्फोट

13 मई, 2008 को जयपुर में शृंखलाबद्ध सात बम विस्फोट किए गए। विस्फोट १२ मिनट की अवधि के भीतर घनी आबादी वाले स्थलों पर किए गए। आठवाँ बम निष्कृय पाया गया। प्रारंभिक सचू नाओं में मृतकों कि संख्या ६० बताई गई थी।(1) इन विस्फोटों को हवा महल के निकट सहित विभिन्न इलाकों में साइकिलों के जरिये अंजाम दिया गया, जहाँ विदेशी पर्यटक आमतौर पर आते हैं। विस्फोटों के बाद काफी देर तक शहर की मोबाइल और टेलीफोन लाइनें जाम हो गईं, जिससे दूसरे शहरों में मौजूद लोग अपने परिजनों और रिश्तेदारों की खैरियत जानने के लिए परेशान होते रहे। ये धमाके त्रिपोलिया बाजार, जौहरी बाजार, माणक चौक, बड़ी चोपड़ और छोटी चोपड़ पर हुए। त्रिपोलिया बाजार में भी एक विस्फोट हुआ, जहाँ एक हनुमान मंदिर है और उस समय वहाँ भारी सख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। ये सभी धमाके दो किलोमीटर के दायरे में हुए। पुलिस ने कहा कि हनुमान मंदिर के निकट बम निरोधक दस्ते ने एक विस्फोटक को निष्क्रिय कर दिया है। मौके पर खून बिखरा पड़ा था। धमाके इतने शक्तिशाली थे कि कुछ लोगों के शव तो कुछ फीट ऊपर तक उड़ गए। हमले की साजिश काफी सावधानी पूर्वक रची गई थी। राजस्थान के पुलिस महानिदेशक एएस गिल ने कहा कि निश्चित तौर पर यह आतंकवादी हमला था।

12 से 15 मिनट में हुए 8 ब्लास्ट

1. पहला ब्लास्ट खंदा माणकचौक, हवामहल के सामने शाम 7:20 बजे हुआ। इसमें 1 महिला की मौत हो गई। जबकि 18 लोग घायल हुए थे।
2. दूसरा ब्लास्ट त्रिपोलिया बाजार स्थित बड़ी चौपड़ के समीप मनिहारो के खंदे में ताला चाबी वालों की दुकानों के पास शाम 7:25 बजे हुआ। यह ब्लास्ट इतना शक्तिशाली था कि इसमें 6 लोगों की मौत हो गई। जबकि 27 घायल हो गए।
3. तीसरा ब्लास्ट शाम 7:30 बजे छोटी चौपड़ पर कोतवाली के बाहर पार्किंग में हुआ। इनमें 2 पुलिसकर्मियों सहित 7 की मौत हो गई। जबकि 17 घायल हुए थे।
4. चौथा ब्लास्ट त्रिपोलिया बाजार में शाम 7:30 बजे हुआ। इसमें 5 की मौत हो गई। जबकि 4 घायल हुए।
5. पांचवा ब्लास्ट चांदपोल बाजार स्थित हनुमान मंदिर के बाहर पार्किंग स्टैंड पर शाम 7:30 बजे हुआ। इनमें सबसे ज्यादा 25 लोगों की मौत हुई। जबकि 49 घायल हुए।
6. छठा ब्लास्ट जौहरी बाजार में नेशनल हैंडलमू के सामने शाम 7:30 बजे हुआ। इनमें 8 की मौत हो गई। जबकि 19 घायल हुए।
7. सांतवा ब्लास्ट 7:35 बजे छोटी चौपड़ पर देवप्रकाश ज्वैलर्स शॉप के सामने हुआ। इसमें 2 की मौत हो गई। जबकि 15 घायल हुए।
8. आठवां ब्लास्ट सांगानेरी गेट हनुमान मंदिर के बाहर शाम 7:36 बजे हुआ। इसमें 17 लोगों की मौत हो गई। जबकि 36 घायल हुए।
9. नौवे ब्लास्ट की कोशिश चांदपोल बाजार में एक गेस्ट हाउस के बाहर की थी। इसमें रात 9 बजे का टाइमर सेट था, लेकिन 15 मिनट पहले बम स्कॉड टीम ने इसे डिफ्यूज कर दिया। उदयपुर में आतंकवादीयो द्वारा की गई गला काटने वाली घटना

कन्हैया लाल तेली एक दर्जी थे जिनकी हत्या दो हमलावरों ने 28 जून 2022 को उदयपुर, के राजस्थान मे की थी। हमलावरों ने हमले को कैमरे में कैद कर लिया और वीडियो को ऑनलाइन प्रसारित कर दिया। लाल को भारतीय राजनेता और भाजपा प्रवक्ता नुपुर शर्मा जिनकी टिप्पणियों के कारण 2022 मुहम्मद टिप्पणी विवाद हुआ था, के समर्थन में एक सोशल मीडिया पोस्ट साझा करने के लिए मार दिया गया था। हमलावरों ने लाल की हत्या करने से पहले ग्राहक बनकर उसकी दुकान में प्रवेश

किया। हत्या के वीडियो इंटरनेट पर पोस्ट किए गए, दो कथित हमलावरों के पास कसाई के चाकू हैं और हत्या की जिम्मेदारी लेते हुए, खुद को मोहम्मद रियाज अख्तर और माहेम्मद घोस के रूप में पहचानते हैं। हमले के वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद स्थानीय अधिकारियों ने कर्फ्यू की घोषणा की और इटंरनेट का उपयोग अवरुद्ध कर दिया, जिससे परू भारत में व्यापक आक्रोश फैल गया। भारत सरकार ने क्रूर हमले के वीडियो को ऑनलाइन प्रसारित होने से रोकने के प्रयास किए जयपुर बम ब्लास्ट केस में बम ब्लास्ट की विशेष अदालत के जज अजय कुमार शर्मा प्रथम ने 20 दिसंबर 2019 को चारों आरोपियों मोहम्मद सैफ, सरवर आजमी, सलमान और सैफुर्रहमान को दोषी करार दिया था. शर्मा ने इन चार दोशियों को फांसी की सजा सुनाई थी. वहीं मुजाहिद्दीन के नाम से धमाकों की जिम्मेदारी लेने वाले आरोपी मोहम्मद शहबाज हुसैन को सदेंह का लाभ देते हुए बरी कर दिया था. लेकिन दोषियों की अपील पर फैसला सुनाते हुए 28 मार्च 2023 को हाई कोर्ट ने परू मामले में एटीएस की थ्यौरी को गलत बताते हुए चारों आरोपियों को बरी कर दिया.

आतंकवाद की समस्या के निवारण हेतु महत्वपूर्ण सुझावः निःसंदेह आतंकवाद की समस्या एक विश्व व्यापी समस्या है, जिसका समय रहते निराकरण किया जाना अति आवयश्यक है। वस्तुतः निम्न उपायों को अपनाकर आतंकवाद की समस्या को काफी हद तक रोका जा सकता है–

- **धार्मिक सद्भावनाः** धर्म को सही ढंग से समझना होगा। मानवजाति धर्म, जातिवाद के भंवर में इस कदर फंस गई है, कि धर्म के उपर इंसानियत के बारे में सोचती ही नहीं है। धर्म हमारी सुविधा के लिए है। धर्म अच्छी शिक्षा, ज्ञान की बातें इंसानियत सिखाता है। हमें धर्म, जाति के उपर इसं ानियत को रखना चाहिए।
- **शिक्षा का प्रसारः** आतंकवाद को दूर करने के लिए अच्छी शिक्षा की बहुत जरूरत है। अनुकूल शिक्षा मिलने पर इन्सान की सोच बदलेगी, उसकी सोचने समझने की शक्ति मे ं बदलाव आएगा और वो सही दिशा में ही सोचेगा। शिक्षित व्यक्ति अपना अच्छा बुरा जानता है, उसको गलत शिक्षा देकर बहलाया नहीं जा सकता।
- **प्रमुख देशों द्वारा समाकलित प्रयासः** आतंकवाद से निपटने के लिए देश दुनिया को मिल कर काम करना होगा, और इसलिए हर साल 21 मई को आतंकवाद विरोधी दिवस मनाया जाता है। इस समस्या से लड़ने के लिए एक अकेला देश कुछ नहीं कर सकता, क्यूकि ये विश्व व्यापी समस्या है।

आतंकवाद का सामना करने की कार्यनीति

भारत में आतंकवाद से लड़ने के लिये राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यनीति के समग्र परिप्रेक्ष्य में एक कार्यनीति, तैयार करने की आवश्यकता है। आतंकवाद के जोखिम से निपटने के लिये एक बहु–आयामी दृ ष्टिकोण आवश्यक है। राष्ट्रीय सुरक्षा का अर्थ, देश में प्रत्येक नागरिक के जान और माल तथा साथ ही राष्ट्र के ससांधनों की सुरक्षा है। राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यनीति का उद्देश्य एक सुरक्षा वातावरण का सृजन करना है, जो राष्ट्र के लिये सभी व्यक्तियों को अपनी पूर्णतम क्षमता विकसित करने के अवसर प्रदान करने मे ं समर्थ बनाए। राष्ट्रीय सुरक्षा कार्यनीति पर अधिकांश चर्चाएँ इस बात पर आधारित रही हैं कि राष्ट्रीय सुरक्षा सभी के जान–माल का सरंक्षण सुनिश्चित करते हुए प्राप्त की जा सकती है। यहाँ स्पष्टतरू समझ लेना आवश्यक है कि सामाजिक–आर्थिक विकास और एक सुरक्षित वातावरण प्रदान कराने की प्रक्रिया को साथ–साथ सचं ालित करना होगा क्योकि दोनो ं एक दूसरे पर निर्भर करते है। कोई खतरा जो इस प्रक्रिया को धीमा कर सकता है, उसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये खतरा माना जाना चाहिये। एसे ं खतरें युद्ध, आतंकवाद सगं ठित अपराध, ऊर्जा की कमी, जल और भोजन की कमी, आंतरिक विवाद, प्राकृ तिक अथवा मानव–निर्मित आपदाओं आदि से उत्पन्न हो सकते हैं।

प्रचार माध्यम प्रचार माध्यम समाचारपत्रों, प्रकाशनों, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और इंटरनेट सहित जन सचू ना एवं सचांर के सभी माध्यमों को प्रदर्शित करने के लिये प्रयुक्त एक व्यापक शब्द है। प्रचार माध्यमों ने जन जीवन में सदैव मुख्य भूमिका निभाई है। इलके ट्रॉनिक मीडिया के शुभारंभ और प्रिंट मीडिया के आधुनिकीकरण से प्रचार माध्यम का सीमा क्षेत्र, प्रभाव एवं प्रतिक्रिया अवधि काफी सुधर गई हैं। ऐसे भी उदाहरण रहे हैं जहाँ प्रचार माध्यम की रिपोर्टों ने विवादों को भड़काया है; यद्यपि कई अवसरों पर वे हिंसा फैलने से रोकने में सहायक भी रहे हैं। इस प्रकार, प्रचार माध्यम के अभिप्राय पर ध्यान दिये बिना समाचार का कवरेज आतंकवादियों की प्रत्याशाएँ पूरी कर सकता है। आतंकवादियों में भी प्रचार की लालसा होती है और प्रचार माध्यम को आतंकवादियों को उनके कार्य में अनजाने ही सहायता नहीं करनी चाहिये। यह आवश्यक है कि सरकार को आतंकवाद को परास्त करने की अपनी कार्यनीति का भाग के रूप में जन प्रचार माध्यम की शक्ति का उपयोग करने के लिये कार्य करना चाहिये। निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित एक सकारात्मक प्रचार माध्यम नीति होना आवश्यक है–शासन में पारदर्शिता। सचू ना और स्रोतों तक सरल पहुँच। प्रशासनिक, कानूनी और न्यायिक उल्लंघनों और ज्यादतियाँ जो आतंकवाद की स्थिति में नागरिक तथा प्रजातांत्रिक अधिकारों को खतरे में डालती है, की जाँच करने और रोकने के लिये सतर्कता के साधन के रूप में प्रचार माध्यम की भूमिका को आगे बढ़ाना। सकंट विशेषकर आतंकवाद की संसूचित, उचित और संतुलित कवरेज करने की अपनी भूमिका परूी करने के लिये प्रचार माध्यम को सलंग्न करना, समर्थ बनाना, प्रोत्साहित करना एवं सहायता करना। प्रचार माध्यम की नीति में आत्मसंयम का सिद्धांत शामिल करना चाहिये। प्रकाशकों, संपादकों और रिपोर्टरों को प्रचार माध्यम के कवरेज के उन तत्वों से बचने एवं अपवर्जित करने के लिये सुग्राही बनाना आवश्यक है, जो अनजाने ही आतंकवाद की कार्यसूची को बढ़ावा देते हैं। प्रचार माध्यम के सभी रूपों को यह सुनिश्चित करने के लिये कि आतंकवादी हमले से उत्पन्न प्रचार अपने घृणित आशय से आतंकवादी की सहायता नहीं करे तथा एक आत्म नियत्रं ण आचार सहिता तैयार करने के लिये प्रोत्साहित किया जाना चाहिये।

निष्कर्ष

विकास, स्थायित्व, सुशासन और कानून का शासन एक दूसरे से सहसंबद्ध हैं और अशांति को उत्पन्न कोई भी खतरा देश के सतत विकास के उद्देश्य में बाधा बनता है। आतंकवाद न केवल राजनीतिक और सामाजिक वातावरण को नष्ट करता है बल्कि देश के आर्थिक स्थायित्व को खतरा भी पहुँचाता है, प्रजातंत्र को दुर्बल बनाता है और यहाँ तक कि सामान्य नागरिकों को जीने के उनके अधिकार सहित बुनियादी अधिकारों से वचित करता है। आतंकवादी किसी धर्म अथवा सप्रं दाय या समुदाय के नहीं होते। आतंकवाद कुछ उग्र लोगो, जो अपने घृणित लक्ष्यों की प्राप्ति में निर्दोष नागरिकों की लक्षित हत्या का आश्रय लेते हैं, द्वारा प्रजातंत्र और सभ्य समाज पर हमला है। आज आतंकवाद ने आधुनिक सचांर प्रणालियों, सगंठित अपराध, मादक द्रव्य के अवैध व्यापार, जाली मुद्रा और वैश्विक स्तर पर इनके प्रयोग सहित

विश्वभर में अंतर्राष्ट्रीय शांति और स्थायित्व को खतरा पहुँचाते हुए नया तथा अधिक खतरनाक आयाम प्राप्त कर लिया है। इसीलिये आतंकवाद के विरुद्ध सघंर्ष में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अनिवार्य है। भारत आतंकवाद के सबसे अधिक पीड़ितों में से एक रहा है परंतु हमारे समाज ने सांप्रदायिक सौहार्द और सामाजिक तालमेल बनाए रखते हुए बारंबार एवं बेलगाम आतंकवादी हमलों के समय अभूतपूर्व जीवटता तथा समुत्थान शक्ति प्रदर्शित की है। आतंकवाद–रोधी कार्यनीति को यह मानना चाहिये कि आतंकवाद कार्य न केवल निर्दोषों को बर्बाद करता है परंतु हमारे समाज को विभाजित करता है, लोगों के बीच मतभेद उत्पन्न करता है और समाज के ताने–बाने को अत्यधिक क्षति भी पहुँचाता है। आतंकवादियों और राष्ट्र–विरोधी कार्यकलापों के विरुद्ध सुरक्षा एजेसियों द्वारा सतत् और सख्त कार्रवाई करने के अतिरिक्त नागरिक समाज भी आतंकवादी कार्यकलापों को रोकने और आतंकवाद की विचारधारा का प्रतिरोध करने में मुख्य भूमिका निभा सकता है। आतंकवाद के विरुद्ध सघंर्ष करने में नागरिकों और प्रचार माध्यम द्वारा सहयोग भी समान रूप से महत्त्वपर्ण है। रिपोर्ट का बल इस बात पर है कि सुशासन, सम्मिलित विकास, सतर्क प्रचार माध्यम और एक जागरूक नागरिकता के साथ सयोजित कानूनी एवं प्रशासनिक उपायों को शामिल करते हुए एक बहुआयामी दृष्टिकोण आतंकवाद किसी भी रूप को परास्त कर सकता है। उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है की आतंकवाद की समस्या ना केवल राजस्थान अपितु समस्त देश के लिए एक गंभीर समस्या है, जो समय–समय पर अपना क्रूर रूप दिखाती है। अतः इस समस्या के समुचित निवारण हेतु व्यापक स्तर पर प्रयास किये जाने आवश्यक है, तथा इस सदंर्भ में शिक्षा एक महत्वपर्ण विकल्प है। जनसमुदाय में शिक्षा का उचित प्रसार कर इस समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

सन्दर्भ

1. अर्जेंटीनियन नेशनल रिऑर्गेनाइजेशन प्रोसेस डिक्टेटरशिप जो 1976 स` 1983 तक चली।
2. अबुकमल के शासन पर अमरीकी आक्रमण के संदर्भ में, टेर्ररिस्ट यू. एस. 28.10.2008
3. ब्रुसहोफ्फमन, इन्साइड टेर्ररिज्म, सेकण्ड एडिसन, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006, पृष्ठ 41
4. कार्सटीन बॉकस्टीट, जार्ज सी. मार्शल सेंटर ओकशेनल पेपर सीरीज (20), 2008
5. वाल्टर लॉकर, ए एजे ऑफ टेर्ररिज्म, मेलबोर्न यूनिवर्सिटी पब्लिशिंग, 2002, पृष्ठ 8
6. शिमिड व जोगं मन, एटअल पोलिटिकल टेर्ररिज्मः ए न्यू गाइड, नॉर्थ हॉलेण्ड ट्रांजेक्सन बुक्स 1988, पृष्ठ 28
7. सरजी जागराइवस्की, 365 रिफ्लेक्शंस ऑन ह्यूमन एंड ह्यूमेनिटी अलीखान, ए लीगल थ्योरी ऑफ इटं रनेशनल टेर्ररिज्म, कनेक्टीकट ला रिव्यू 1987, वॉल्यमू 19, पृष्ठ 945
8. रोजलिन हिगिंस एवं एम, फलोरी, इंटरनेशनल ला एंड टरे ंरिज्म, 1997, पृष्ठ 28 समाचार पत्र–
9. दि टाइम्स आफ इण्डिया, नई दिल्ली
10. दि हिंदुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली
11. राजस्थान पत्रिका
12. दैनिक भास्कर
13. सीमा सन्देश पत्रिका
14. दैनिक नवज्योति पत्रिका